मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 68, सितम्बर(प्रथम), 2019

स्वाधीनता दिवस पर:

आधी आबादी

गुलामी की मारी औरत मारी बेचारी

डॉ0 घनश्याम बादल

एक बार फिर, एक और स्वाधीनता महोत्सव आ गया । पिछले 72 बरसों में देश ने बहुत तरक्की की है पर साथ ही ऊंचाईयों के साथ गिरावट में भी कमी नहीं रही । भौतिक प्रगति के नए आयाम गढ़े गए हैं तो नैतिक पतन भी पराकाष्ठा भी हुई । आज के दिन सब कुछ भूलभाल कर पुरुष , स्त्री , बच्चे , बूढ़े जवान सब उम्मीदों के हिंडोले में झूल रहे हैं । शिखर पर पंहुचने , वहां टिकने और बने रहने की उम्मीदें हर जष्न ए आज़ादी पर जगना स्वाभाविक भी हैं । , हर बार उम्मीदें कहती हैं कि देश बदलेगा , सोच बदलेगी और "मेरा देश बदल रहा है आगे बढ़ रहा है मेरा देश" का नारा सच में ज़मीन पर उतरा दिखेगा । अच्छे दिन सच में आएंगें ।

मर्द तो आज़ाद पर....

मर्दों के लिए हर रोज नए सूरज के साथ आशाएं जगती हैं ,चमक दिखती है बदलाव आते लगते हैं मगर स्त्री के तमस भरे जीवन की कहानी नहीं बदलती । औरत की अंधेरे की रात जस की तस बनी रहती है हर बार जश्न आता है और चला जाता है मगर पीछे रह जाता है वही सदियों पुराना " अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी .... का फसाना ।

गुलाम है आधी आबादी

आज भी आधी दुनिया यानि औरत को आज़ादी के 72 साल खुश नहीं करते । वही षा◌ासन का ढर्रा वही समाज , वही सोच , वही शोषण , वहीं तन , मन को बींधने वाली बिसातें वही जर्जर हाल , पीछा करती कामुक निगाहें , पग - पग पर आत्मा को लहू लुहान करते बलात्कार हर क्षेत्र में भेदभाव की मार कम वेतन , ज्यादा काम का बोझ कमोबेष यही कहानी है थोड़ी सी नौकरीपेशा , अधिकारी या उद्यमी औरतों को छोड़कर ज्यादातर स्त्रियों की । जब हर बार सब वही तो फिर कैसे कहें कि स्त्री के हिस्से में भी आई है आज़ादी की सुवासित बयार । स्त्री के सपनों को आधा अधूरा रहने व मरते जाने की पड़ताल करने की जरुरत है खास आज के दिन ।

पीछे पलटकर देखने का दिन है आज कि स्त्री के सपने क्या थे और क्या उसे मिला ? , क्या उसने हासिल किया व क्या उससे छिन गया और वह क्या चाहती है आज़ादी से ।

मर्द की जागीर क्यों

आजादी के इतने साल बाद भी मर्द स्त्री को अपनी पुश्तैनी जागीर मानता है और आज भी अधिकांश मर्द इसी मानसिकता के चलते औरत को 'यूज' एंड थ्रो ' करने में गुरेज़ नहीं करते । मर्द भले ही वें उसे मां , बहन , बेटी , देवी व पूज्या जैसे विशेषण दे , पर देखता व रखता है उसे 'भोग्या' रूप में ही । बंधनों से बाहर आने का प्रयास करने वाली हर औरत के पंख कतरने के पूरे पूरे प्रयास करता है । तो क्या इस आज़ादी की बरसी पर हर वामा सपना देखे कि वह न भोग्या बने न ही पूजा की रोली, थाली तो क्या गलत है यह हक है उसका । पर क्या उसे उसके हक व सम्मान मिले जिसकी वह हक़दार है ? जवाब 'न' में है । केवल आश्वासन या नारे ही हिस्से में आने हैं औरत के तो इस आज़ादी के कोई खास मतलब नहीं वामा के लिए ।

बिंधती आत्मा और देह

हर रोज के अखबारों और टी वी चैनलों के समाचारों के बलात्कार , ऑनर किलिंग या आत्महत्याओं के आंकड़े दिल दहलाने वाले हैं । मां , बेटी ,बहन के साथ होते गैंग्र रेप कभी दामिनि , कभी नैना , कभी भंवरी , कभी जेसिका, नाम भले ही बदलें पर प्रवृत्ति बदलने का नाम नहीं ले रही । अनवरत घटित होते बलात्कारों व गैंगरेपों से हजारों लाखों बच्चियां ,किशोरियां , विवाहिताएं , कभी प्रेम के धोखे से कभी जबरदस्ती तो कभी बदले की हिंसक चाह से शिकार बन रही हैं । यदि सच्चा आंकड़ा सामने आ जाए तो लगेगा कि जैसे देश को यौनाचार के अलावा दूसरा काम ही नही रहा । हर औरत कामना करती होगी कि देह आत्मा और नुचवाने का यह वीभत्स सिलसिला हर हाल में रुके । पर क्या 72 वां साल उसे यह गिफ्ट दे पाएगा यह देखने वाली बात है ।

मुंह पर लगा ताला

अजीब सी बात है कि अभिव्याक्ति की आज़ादी होने के बाद भी यादि किसी स्त्री ने गलती से भी अपनी पसंद व हक की बात कह दी तो हंगामा बरपना तय है आज भी । मुल्ले , मौलवी व पंडे टूट पड़ते हैं उपदेषों के साथ , षरियत व मनु स्मृति तथा वेद पुराण जाग उठते हैं अधूरे व मनमाफिक विवेचनों के साथ । मर्द तलाक दे , औरत को हलाला करने को विवष करे , दूसरे मर्द के साथ सोने को मज़बूर करे गुस्सा आए तो बस तीन बार 'तलाक तलाक तलाक' कह कर विवाह की डोर तोड़ दे । उसे सड़क पर ले आए यह कहां का न्याय है ? और इसी न्याय की मांग करती दिखती है 73 वें आज़ादी केक जश्न के मौके पर नारी ।

असल में आज़ादी पाने के लिए स्त्री क्या करे , क्या कहे , क्या पहने सब तय करने का ठेका भी मर्दों ने जबरदस्ती ले रखा है । अपना जबरदस्ती का हक छोड़ने कों तैयार नही वह । अब आज़ादी तो यह छद्म आज़ादी ही हुई न ! इसी छद्म आजादी से मुक्ति का हल ढूंढना है आज की स्त्री को ।

उफ्फ गिद्ध सी पैनी नज़रें

अब तक कितनी औरतें ,लड़कियां ,बच्चियां हादसों की शिकार बनीं , बाबाओं , संतों , ब्यूरोक्रेटों , नेताओं , अभिनेताओं सब के नाम औरत को लूटने - खसोटने में सामने आ रहे हैं । नारी संरक्षण घर तक वह लुट

रही है अब लुटेरा कोई भी हो , पर लुट - पिट स्त्री ही रही है । कुछ गिद्ध सी पैनी नज़रें हर पल स्त्री को डराती रहती है । मीड़िया की सजगता व कभी- कभी टी आर पी बढ़ाने के लालच में कुछ केस सामने आते भी हैं तो भारत को संस्कारों का देष कहना बेमानी लगने लगता है । स्त्री बेशक चाहेगी फिर लौटे संस्कारों का भारत जहां " यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवताः " के कथन व सिद्धांत को जिया जाता था ।

औरत ही दुश्मन

सदियों तक मर्द के लिए एक खिलौना रही है औरत । पहले खुद नोचा , फिर कोठो पर बैठाया । हालांकि उसके षोष्ण में खुद औरत का भी कम हाथ नहीं है , अपने स्वार्थ में गांवों से , कस्बों से , षहरों से भटकी व मज़बूर लड़कियों को सुनहरे खाब दिखाकर लुटवाने में औरों के साथ औरत का भी हाथ रहा है । 2018 में हर औरत दुआ करेगी कि ये भयानक संजाल टूटे और वह खुले आसमान में भयमुकत होकर उन्मुक्त उड़ान भरने को स्वतंत्र हो जाए ।

उद्योग बनता 'देहबाजार'

आंकड़ों की दुनिया पर यकीन करें तों आज भारत में हर 5 में एक महिला किसी न रूप में यौनाचार से पीड़ित है हैं ,यदि यह आंकड़ा सच है तो यह औरतों की बदकिस्मती ही कही जाएगी । दुःख की बात है कि आज़ादी के 71 साल बाद भी भारत महिलाओं के लिये दुनिया का चौथा सबसे खतरनाक देष आंका गया है और यहंा के 'देहबाजार' का टर्नओवर किसी उद्योग से कहीं ज्यादा है अकेले मुम्बई में ही सेक्स उद्योग में करीब दो लाख लड़कियां लगी हुई हैं जो कोलकाता के मुकाबले कम हैं क्योंकि वहां का सेक्स उद्योग मुम्बई से हमेशा ही आगे रहा है । अनुमान है कि इस देश में हर साल करीब दो सौ अरब का देह व्यापार होता है । जिसका मतलब है इतनी रकम से देश भर में हर साल 2000 अस्पताल खुल सकते हैं या 50000 स्कूल खोले जा सकते हैं अगर ऐसा हो जाए तो न केवल औरत बचेगी वरन नई पीढ़ी को शिक्षा व स्वास्थ्य में एक नई किरण मिलेगी । काश ,इस सपने को सच कर पाए 72वां स्वतंत्रता दिवस ।

आर्थिक आज़ादी भी नहीं :

आज भले ही स्त्री कमाती है ,घर चलाती है पर उसकी हथेली अपने ही कमाए पैसे के लिए भी दूसरों के आगे फैली रहती है । उसकी कमाई पर कब्जा रखता है उसका पति , बेटा या भाई । काम के क्षेत्र में भी उसके काम की कीमत मर्द से कम ही आंकी जाती है , घर के उसके काम को तो काम हीे नहीं माना जाता जबकि यदि बाजार मूल्य पर एक स्त्री के काम की कीमत आंकी जाए तो हर स्त्री रोजाना 700 रुपए से ज्यादा का काम करती है रोटी बनाने से लेकर कपड़े धोने , बच्चे पालने साज सफाई करने सीने - काढ़ने का काम यदि बाजार से कराया जाए तो हर महिने कम से कम 21000 रुपए खर्च होगे मर्द के । निस्संदेह इस बार उसका सपना होगा कि वह अपने पैसे को अपने ढंग से खर्चे ।

अस्तु , आजादी है और रहे , यही दुआ है । पर, स्त्री के हिस्से भी तो आनी चाहिए यह आज़दी तब ही कह सकते हैं हम पूरे आज़ाद हैं ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें